पद २८८

(राग: देस - ताल: त्रिताल)

म्हणुनी जग नाहीं जग नाहीं। जग हे ब्रह्मचि पाहीं।।ध्रु.।। स्फूर्तिरूप तेचि माया। मायाविण ब्रह्म वाया।।१।। माणिक म्हणे अनिर्वाच्य। वाचेविण अनिर्वाच्य कैचें।।२।।